R.N.I NO. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2017-19 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

Annual Rs. 200/- July 2017 Per Copy- Rs.25/-

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

سید المفسرین صدر المحققین سید العلماء آیۃ اللہ العظمیٰ سید علی نقی نقویؒ

ولادت ۲۶ رجب ۱۳۲۳ھ مطابق ۱۹۰۵ء وفات یکم شوال ۱۴۰۸ھ مطابق ۱۸ مئی ۱۹۸۸ء

Lucknow

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDI A, Ph.:0522-2252230

ماہنامہ

شعاعِ عمل

لکھنؤ

جولائی ۲۰۱۷ء

قَالَ اللّٰہُ تَبَارَکَ وَتَعَالیٰ قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللّٰہِ نُوْرٌ وَکِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآب، چوک، لکھنؤ-۳

Per Copy 25/-
Annual 200/-

बिस्मेही तआला

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

जुलाई– 2017 ई०

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

वर्ष 14 — अंक 1

न्यास संस्थापन

15 जमादिलऊला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलऊला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षक:
मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

संरक्षक

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै. **कल्बे जवाद** नक़वी साहब

माननीय **नवाब रज़ा** साहब, भोपाल

माननीय **सै0 अहमद अब्बास नक़वी** साहब, मुम्बई

सलाहकार समिति

- प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी, अलीगढ़
- डॉ0 महदी ख़्वाजा पीरी, ईरान
- मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी, कराची
- कैप्टन सिकन्दर रिज़वी, लखनऊ
- प्रोफ़ेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- शायरे अहलेबैत रज़ा सिरसिवी, सिरसी
- सै0 सैफ़ तक़ी नक़वी, दिल्ली
- मुहम्मद आलिम, हुसैनाबाद, लखनऊ

सम्पादक
सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप–सम्पादक
क़ायम महदी नक़वी 'तज़हीब' नगरौरी
आसिफ़ अब्बास नौगांवी

मिलने का पता

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230 Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी द्वारा स्वामी एस कलबे जवाद नक़वी के लिए निज़ामी प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट अपोज़िट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन, इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।
सम्पादक: सैय्यद मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी

सम्पादन समिति

- डॉ० अमानत हुसैन नक़वी
- हैदर अब्बास नक़वी, इलाहाबाद
- अमील शम्सी, लखनऊ
- वासिफ़ अहमद नक़वी 'समीर'
- महदी रज़ा
- शाहिद अली आज़मी
- जुलफ़ेक़ार हैदर आज़मी
- अलहाज मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- रेहान आलम, लखनऊ
- सलमान हुसैन
- बिन्ते ज़हरा 'नदल हिन्दी'
- अलहाज फ़रीद महदी रिज़वी

- ज़फ़र हुसैन रिज़वी ब्यूरोचीफ़ मुम्बई
- इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश
- कैफ़ तक़ी नक़वी, ब्यूरोचीफ़ देहली

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

▼▼▼

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2017-2019

●●●

WEBSITE:

www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:

noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com
shuaeamallucknow@gmail.com

वार्षिक अंशदान

1- एक साल के लिए 200/-
2- पांच साल के लिए 800/-
3- लाईफ़ मिम्बरशिप 5000/-

विषय सूची

जुलाई 2017ई०
शव्वालुल मुकर्रम 1438हि०

नं०	लेख व लेखक	पृष्ठ
1.	**शहीदे इन्सानियत (क़िस्त–5)** आयतुल्लाहिल उज़मा सै0 अली नक़ी नक़वी	5
2.	हज़रत अमीर (अ०) का एक ख़ुत्बा मौलाना मुफ़्ती जाफ़र हुसैन साहब क़िब्ला	15
3.	मुख़्य समाचार इदारा	17

मासिक
''शुआ–ए–अमल''
(हिन्दी–उर्दू)

''ख़ानदाने इज्तेहाद नम्बर''
दैनिक नक़ीब लखनऊ

और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित
सभी किताबों को डाउनलोड करने के लिए
लॉग आन करें हमारी वेबसाइट

Log on Our Website:
www.noorehidayatfoundation.org,
www.naqeeblucknow.com

शहीदे इन्सानियत

आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी ताबा सराह

पाँचवाँ बाब

हुसैन बिन अली[अ0स0]की विलादत और इब्तेदाई ज़िन्दगी सन3 हिजरी (से) सन 11 हिजरी

हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा[स0अ0] को मक्के से हिजरत करके मदीने में आये हुए तीसरा बरस था।[1] कि 5 शाबान को हुसैन बिन अली की विलादत हुई। [2]

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स0अ0] अपने पिदरे बुज़ुर्गवार रिसालतमाब की ख़िदमत में मौलूद को लेकर हाज़िर हुईं। हज़रत ने हुसैन नाम रखा और एक मेंढे (भेड़) की क़ुर्बानी के साथ अक़ीक़ा किया।[3]

अब पैग़म्बरे इस्लाम[स0अ0] की गोद जो इस्लाम की तरबियत का गहवारा थी उन दो बच्चों की परवरिश का मरकज़ बनी, एक हसन और दूसरे हुसैन[अ0स0]।

उनकी आँखों के सामने एक तरफ़ नाना का उसव–ए–हसना (नेक सीरत) था जो बानिये इस्लाम थे, दूसरी तरफ़ बाप जो मुजाहिद व मुहाफ़िज़े इस्लाम थे और तीसरी तरफ़ माँ जो तब्क़–ए–ख़ावातीन के लिये तालीमाते पैग़म्बर[स0अ0] की अमली तरजुमान बनने के लिये पैदा हुई थीं। ब–क़ौल इक़बालः

मज़रये तस्लीम रा हासिल बतूल
मादराँ रा उसव–ए कामिल बतूल

तरजुमाः मस्जिद में पाँचों वक़्त नमाज़े जमाअत पैग़म्बर के बसीरत आफ़रीं मवाएज़ (वाज़) और ख़ुत्बे, मुसलमानों का ज़ौक़ व शौक़ और जोशो ख़रोश और घर में रात दिन इबादत व ज़िक्रे इलाही की आवाज़ें, तकबीर की सदायें, वही की आयतें, ग़ज़वात (जंगें) के तज़केरे, इस्लाम को तरक़्क़ी देने के मशवरे और या फिर ग़रीबों की ख़बरगीरी, कमज़ोरों की दस्तगीरी और मज़लूमों की दादरसी बस हर वक़्त यही ज़िक्र है यही फ़िक्र। यही क़िस्से हैं और यही कहानियाँ। एक तरफ़ फ़ितरत के मख़सूस अतिये थे, दूसरी जानिब यह नूरानी और रूहानी माहौल और इस पर तरबियते पैग़म्बर। ऐसे बलन्द मुअल्लिम कि जिनका मक़सदे रिसालत ही क़ुरआन के एलान के मुताबिक़ ''तज़किय–ए–नुफ़ूस (दिलों की पाकीज़गी) और तालीमे किताब व हिकमत था।[4]और आपने ख़ुद भी ऐलान किया था कि मकारिमे अख़लाक़ की तकमील मेरा असली नसबुल ऐन (मक़सद) है। फिर क्योंकर मुमकिन था कि रसूल अपने अहलेबैत की तरबियत में इस फ़र्ज़ को नज़र अन्दाज़ कर देते जो ब–हैसियते मुअल्लिमे (उस्ताद) अख़लाक़ के ब–हैसियते बुज़ुर्ग ख़ानदान के और ब–हैसियत एक पैग़म्बर के आप पर आएद होता था। चुनानचे हज़रत ने इस कमसिनी ही के आलम में इन बच्चों को अपने अख़लाक़ व औसाफ़ का नमूना बना दिया और उन आईनों में जो क़ुदरत की तरफ़

[1]काफ़ी जि/1, पेज/394

[2]मक़ातिलुत तालिबीन पेज/54, इरशाद [3]इरशाद

[4]क़ुर्आने करीम सूरए बक़रा आयत/129 व 151, आले इमरान आयत 165, जुमा आयत/2

से कमाल का जौहर लेकर आये थे अपनी सीरत का पूरा अक्स उतार दिया।

उन्हीं ज़ात व सिफ़ात की मख़सूस बलन्दियों का यह नतीजा था कि रसूल[स0अ0] इन अपने नवासों के साथ ग़ैर मामूली मोहब्बत रखते थे जिसके मुज़ाहरात (इज़हार) तारीख़ और हदीस की किताबों में यकसाँ तौर पर दर्ज हैं। इसके अलावा आप दूसरों को भी इनसे मुहब्बत की ताकीद फ़रमाते थे। आपका क़ौल था कि जिसने हसन[अ0स0] व हुसैन[अ0स0] से मुहब्बत रखी, उसने मुझ से मुहब्बत रखी और जिसने उनको दुश्मन रखा उसने मुझे दुश्मन रखा।[5] आप अल्लाह को गवाह करते थे कि मैं इनसे इन्तेहाई मुहब्बत करता हूँ।[6] मगर इन तमाम बातों के साथ साथ हुसैन[अ0स0] अपने नाना की बलन्द सीरत, फ़राएज़ के बारे में एहतिमाम और इस्लाम के मुतअल्लिक़ आपके इन्हेमाक (लगन) को देखते हुए यह मशाहिदा करते थे कि रसूल अल्लाह हमको बहुत चाहते हैं। मगर हमसे ज़्यादा आप अपने दीन यानी इस्लाम और उसके आईन व शरीअत को चाहते हैं। इसलिये अगर इस दीन और शरीअत पर कोई वक़्त पड़े तो पैग़म्बर तय्यार होंगे कि हम को इस पर निसार कर दें।

सन 10 हिजरी में नजरान (यमन) के ईसाइयों के साथ एक तरह के रूहानी मुक़ाबले का मौक़ा आया जिसका नाम ''मुबाहला'' है। यानी दोनों फ़रीक़ (दोनों तरफ़ के लोग) अल्लाह से दुआ करें कि झूठे पर अज़ाब नाज़िल हो, इस मौक़े पर रसूल[स0अ0] तशरीफ़ ले गए तो इस तरह कि हाथ में अली इब्ने अबी तालिब[अ0स0] का हाथ था। हसन व हुसैन[अ0स0] आगे आगे थे और फ़ातिमा ज़हरा[स0अ0] पीछे आ रही थीं। नजरान वाले यह नूरानी मन्ज़र देखकर मरऊब (डरे) हुए और ख़िराज (टैक्स) देने के लिये आमादा हो गए।[7] ज़ाहिर है कि पैग़म्बरे खुदा इस मुहिम को तन्हा सर कर सकते थे। फिर कुरआन की तसरीह[8] (वाज़ाहत) के मुताबिक़ रसूल अल्लाह[स0अ0] अपने अहलेबैत को साथ ले जाने पर क्यों मामूर हुए? इसका मक़सद एक तरफ़ हक़ के कामिल नुमाइन्दों का ख़ल्क़ (लोगों) से तआरूफ़ था तो दूसरी तरफ़ तालीम व तरबियत का अन्दाज़ा भी था। गोया अभी से ख़ानदाने रसूल की इन हस्तियों पर ज़िम्मेदारी का बार डाला जा रहा था कि ज़रूरत के वक़्त हिफ़ाज़ते इस्लाम की इन ही से उम्मीद है। रसूल[स0अ0] इन में से एक एक का हाथ पकड़ कर कह रहे थे कि देखो आज तो मैं खुद मौजूद हूँ। मैं तुमको अपने साथ लिये जा रहा हूँ लेकिन अगर किसी वक़्त में मैं मौजूद न हूँ तो तुम इसी तरह हिफ़ाज़ते इस्लाम के लिये निकल खड़े होना जिस तरह मैं निकला हूँ। आज के इस अमल से यह भी वाज़ेह हो गया कि इस्लाम की नुसरत और ख़िदमत के मौक़े पर मर्द, औरत, जवान, बच्चा कोई मुस्तस्ना (अलग) नहीं हो सकता। और ज़रूरत पर हर एक को इस मक़सद में सर्फ़ होना लाज़िम है। सबसे कमसिन इस जमाअत में हुसैन[अ0स0] थे और ऐसा मालूम हो रहा है कि जैसे इस मौक़े पर साथ लाना कुदरत से इस मुस्तक़्बिल (Future) की तमहीद है कि उन्हीं को अमली तौर पर दोबारा इस मिसाल के पेश करने का मौक़ा मिलेगा जिसे आज पेश किया गया है। हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा[स0अ0] से बढ़कर कोई शख़्स जौहर शनास (खूबियों का जानने वाला) नहीं हो सकता था। आप जानते थे कि आप

[5]सुनन इब्ने माजा जि/1, पेज/33

[6]सही मुस्लिम जि/2, पेज/282

[7]इरशाद, पेज/87

[8]सूरए आले इमरान आयत/61

के तालीमात की हिफ़ाज़त किन के ज़रिये से होगी। इसलिये मुख़तलिफ़ सूरतों से अपनी उम्मत को हिदायत की कि मेरे अहलेबैत की पैरवी करते रहना। कभी फ़रमाया कि मैं तुम में दो गिराँ क़द चीज़ें छोड़ता हूँ। जब तक तुम इन से तमस्सुक (जुड़े) रखोगे गुमराही से महफ़ूज़ रहोगे। इन में से एक कुरआन है और दूसरे मेरे अहलेबैत।[9] और कभी फ़रमाया कि मेरे अहलेबैत की मिसाल कशति–ए–नूह की सी है। जो इस कष्ती पर सवार हुआ। उसने निजात पाई और जो रूगर्दां (गुमराह) हो वह दरिया–ए हलाकत में ग़र्क़ हुआ।[10]

खुसूसियत के साथ अपने दोनों नवासों के बारे में कभी फ़रमायाः ''हसन[अ0स0] व हुसैन[अ0स0] जवानाने अहले जन्नत के सरदार हैं।''[11] इसका मतलब यही हो सकता है कि इन दोनों का किरदार इतना बलन्द है और रहेगा कि इनकी सीरते ज़िन्दगी की अमली हैसियत से तक़लीद ही (उनके दिखाए हुए रास्ते पर) रज़ा–ए–इलाही का सबब बन सकती है और कभी फ़रमाया कि ''यह दोनों मेरे फ़रज़न्द इमाम (वाजिबुल इताअत) हैं ख़्वाह खड़े हों और ख़्वाह बैठे।''[12] आयगा एक मुस्तक़्बिल जब एक इन में से सुलह करके बैठा होगा और एक जिहाद में खड़ा होगा। पैग़म्बरे इस्लाम[स0अ0] के इरशाद से दोनों के तर्ज़े अमल के अपनी अपनी जगह सही होने पर रौशनी पड़ेगी। इसके साथ ख़ास इमाम हुसैन[अ0स0] के बारे में जो हदीसें हैं उनमें से एक यह है कि हुसैन[अ0स0] मुझसे है और मैं हुसैन से हूँ।''[13] यानी मेरा काम और मेरा नाम दुनिया में हुसैन[अ0स0] की ब–दौलत क़ायम रहेगा। इसके अलावा ब–कसरत हदीसें हैं जो फ़ज़ाएल व मनाक़िब की किताबों में दर्ज हैं।

अफ़सोस कि हुसैन के लिये इस लुत्फ़ व मोहब्बत, बेपायाँ सूकून और इतमीनान की उम्र तूलानी नहीं हो सकी। अभी आपका सिन सात बरस का भी पूरा न हुआ था कि रबीउल अव्वल 11 हिजरी में [14]हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा[स0अ0] की वफ़ात हो गई और हुसैन रसूल अल्लाह[स0अ0] के साय–ए–आतेफ़त (मुहब्बत) से महरूम हो गए।

छठा बाब

इमाम हुसैन[अ0स0] की ज़िन्दगी का दूसरा दौर नाना की वफ़ात के बाद से बाप की शहादत तक। सन11 हिजरी (से)सन 40 हिजरी

हज़रत रसूल[स0अ0] की वफ़ात तमाम ख़ानदान के लिये एक बड़ा रूह फ़रसा (दर्द भरा) हादिसा थी। आपके अख़लाक़ व औसाफ़ ने दोस्त और दुश्मन के दिल को मुसख़्ख़र (हमवार) कर लिया था इसलिये आप के दुनिया से उठ जाने का एहसास हर फ़र्दे बशर को था और इस्लामी गिरोह का हर फ़र्द जितना तअल्लुक़ पैग़म्बर से रखता था, उस एतेबार से ग़ैर मामूली तौर पर मुतअस्सिर हो रहा था।

फिर ख़ास अहलेबैत[अ0स0] के ग़म व अलम का अन्दाज़ा कहाँ किया जा सकता है। खुसूसन हुसैन[अ0स0] जिनके साथ पैग़म्बर[स0अ0] की शफ़क़त का अन्दाज़ ही निराला था वह नाना जो अपनी गोद में बिठाता था, सीने पर लिटाता

[9]मुस्नद अहमद हम्बल [10]मआरिफ़ इब्ने कुतैबा
[11]इब्ने माजा जि/1, पेज/29 [12]इरशाद पेज/204
[13]इब्ने माजा जि/2, पेज/33
[14]अल–काफ़ी जि/1, पेज/275, तबरी जि/3, पेज/207

था और काँधे पर चढ़ाता था, जो ज़रा सी भी ख़ातिर शिकनी (तकलीफ़) हुसैन[अ0स0] की गवारा न करता था, आज हुसैन आँखें फिरा फिरा कर चारों तरफ़ देखते थे और वह शफ़ीक़ व मेहरबान नाना नज़र न आता था।

यह भी खुली हुई बात है कि पैग़म्बर की हयात में उनकी ग़ैर मामूली मोहब्बतों को देख कर नीज़ उनके उन मुतवातिर (लगातार) ऐलानात की वजह से कि जो मुझसे मुहब्बत रखता है उसे हुसैन से मुहब्बत करना चाहिये। आम मुसलमान जो भी रसूल के साथ अक़ीदत और मुहब्बत का दम भरते थे और उनके पसीने पर खून बहाने का दावा रखते थे पैग़म्बर[स0अ0] के सामने उनके इन फ़रज़न्दों के साथ इन्तेहाई लतीफ़ तरीन जज़बाते मुहब्बत व नियाज़मन्दी का इज़हार करते थे और अगर ज़रा सा भी उसमें कमी काशायबा पैदा होता था तो पैग़म्बर की तेवरियों पर बल दिखाई देने लगते थे। एक खुला हुआ सुबूत इसका इस वाक़ेये से मिलता है कि जब रसूल हसने मुजतबा[अ0स0] को काँधे पर सवार किये हुए थे और एक सहाबी ने कह दिया कि ''ऐ साहब ज़ादे कितना अच्छा मरकब है तुम्हारा।'' रसूल[स0अ0] ने फ़ौरन टोक दिया और फ़रमायाः ''यह सवार भी तो कितना अच्छा है।''[15] यह बातें ऐसी थीं जिनके बाद मिज़ाजे नुबूअत में कुछ भी दरख़ोर (समझ) रखने वाले मुसलमान या आपके चश्मो अबरू पर चलने वाले नियाज़ मन्दान साहबज़ादों की ख़ातिर दारी और उनके साथ इज़हारे मोहब्बत में ज़रा भी फ़रूगुज़ाश्त (कमी) करते। इस तरह यह कहना हरगिज़ मुबालिग़ा नहीं है कि उस दौर में हुसैन एक चिराग़ थे जिसके गिर्द परवाने तवाफ़ करते थे या एक आफ़ताब जिसके गिर्द सितारे चक्कर लगाते थे। अक़ीदत की एक दुनिया उनके क़दमों पर निसार होती थी और मुहब्बत का एक आसमान था जो उनके सर पर साया फ़िगन (साया किये था) था मगर दुनिया एक हाल पर नहीं रहती। वह इन्क़ेलाबात का मजमूआ है। आज वह मरकज़ जिसकी मेक़नातीसी (चुंबकीय) कशिश दुनिया को जज़्ब किये हुए थी क़ब्र में पहुँचा चुका था। वह एक क्या गया कि हुसैन की दुनिया बिल्कुल बदल गई। वह माहौल भी बिल्कुल तब्दील हो गया जो आपके सामने रहा था। सुबह हुई और रसूल ने दरवाज़े पर आकर आवाज़ दी[16] अस–सलात अस–सलात। यानी उठो उठो नमाज़ का वक़्त आ गया और फिर कुरआन की यह आयत[17] ''**इन्नमा योरीदुल्लाह लेयुज़हेबह अनकमुस रिज्स अहलेल बैते वयोतहहेरकुम ततहीरा**'' पढ़ते थे (जो आयते ततहीर के नाम से मशहूर है।) ''यानी अल्लाह को मन्जूर यही है कि ऐ अहले बैत तुमसे हर तरह की नजासत को दूर रखे और तुमको पाक रखे जो पाक रखने का हक़ है।'' सब फ़ौरन उठ बैठे बाप और भाई की तरह हुसैन ने भी फ़ौरन वुज़ू किया। मस्जिद में पहुंचे। मुसलमानों का इजतेमाअ् हुआ। पैग़म्बर ने नमाज़ पढ़ाई। फिर ज़ोहर, अस्र, मग़रिब और इशा हर वक़्त यही समाँ नमाज़ों के बाद या पहले और ज़रूरत की सूरत में मुख़तलिफ़ अवक़ात पर पैग़म्बर[स0अ0] के ख़ुत्बे। शरीयते इस्लाम की तालीम हासिल करने वालों का हुजूम, क़बाएले अरब और सलातीने (हाकिम) दुनिया के वफ़ूद (Deligation) और सुफ़रा (Ambasdars) का दौर, मुख़तलिफ़ जमाअतों की सरगरमियों का तज़केरा और उसके मुदाफ़ती

[15]सवाएके महर्रेक़ा पेज/83

[16]इस्तीआब जि/2, पेज/615

[17]सूरए अहज़ाब आयत/33

इन्तेज़ामात (निमटने के तरीक़े) दीवानी और फ़ौजदारी के मुक़दमात का पेश होना, गवाहों के बयानात, बहस और जिरह और मुक़दमात का फ़ैसला, मुजरिमों की सज़ायें, ज़कात व खुमुस और अमवाले ग़नीमत का आना, और मुक़र्रर्रा उसूल व क़वाएद के मुताबिक़ तक़सीम। ग़रज़ यह कि दीन और दुनिया के तमाम मसाएल इस एक नुक़ते पर मजतमा नज़र आते थे। हुसैन[अ0स0] अपने नाना के पास तक़रीबन हर वक़्त मौजूद रहते थे और आँख खोल कर इसी आलम से रूशनास हुए थे। अब पैग़म्बर की वफ़ात के बाद यह तमाम समाँ आँखों से ओझल हो गया। इन्क़ेलाब और अज़ीमुश्शान इन्क़ेलाब।

अफ़सोस है कि रसूल[स0अ0] की ख़िलाफ़त का मसअला इतना एख़्तिलाफ़ी बन गया कि आज तक उसकी बुनियाद पर शिया और सुन्नी का तफ़रेक़ा क़ायम है। इस किताब में जो वाक़ेय–ए–करबला को ग़ैर निज़ाई (बग़ैर इख़्तेलाफ़ के) तौर पर दुनिया के सामने पेश करने के लिये लिखी जा रही है इस पर बहस करना मन्जूर नहीं है। न इन नागवार वाक़ेआत का कोई मुस्तक़िल तज़किरा मक़सूद है। बहरहाल यह मुत्तफ़क़ अलैह तारीख़ी हक़ीक़त है कि रसूल[स0अ0] के बाद कुछ अफ़रादे उम्मत ने मुत्तफ़िक़ हो कर सियासी इक़तेदार ख़ानदाने रसूल से हटा दिया है। इस इन्क़ेलाब का लाज़मी नतीजा यह था कि सरकारे रिसालत के बाद डेयूढ़ी की चहल पहल और रौनक़ सन्नाटे से तब्दील हो गई और वह माहौल जिसमें हुसैन[अ0स0] ज़िन्दगी बसर कर रहे थे एक दम बिल्कुल बदला हुआ नज़र आया।

हुसैन[अ0स0] माँ के पास जाते तो यह देखते कि सिवा अवक़ाते नमाज़ के हर वक़्त गिरया व ज़ारी से काम है कुछ दिन तक तो घर ही पर रोया करती थीं फिर अहले मदीना की इस शिकायत पर कि आपके नाला व शेवन (रोना पीटना) ने हम पर ख़्वाब व ख़ोर (खाना पीना) हराम कर दिया है, आप जन्नतुल बक़ीअ् में चली जाती थीं और उस क़ब्रिस्तान में गिरया करती रहती थीं।[18] हुसैन[अ0स0] बाप के पास आते तो यह देखते कि उन्होंने अहले ज़माना की बेरूख़ी को देखते हुए घर से निकलना और लोगों से मिलना जुलना तर्क कर दिया है। आप हर वक़्त एक गोशे में बैठे कुरआने मजीद के मुतफ़र्रिक़ अजज़ा (मुख़तलिफ़ हिस्से) को असली तरतीब और शाने नुज़ूल के मुताबिक़ किताबी शक्ल में मुरत्तब करते रहते हैं और फ़रमाते हैं कि मैं ने अहद किया है कि अबा दोश पर न डालूँगा जब तक कि कुरआन जमा न कर लूँ।[19] क्या इस सूरते हाल को देखकर हुसैन[अ0स0] का दिल न घुटता होगा। वह सोचते होंगे कि ऐ खुदा यह कैसा अंधेरा है जो एक दम हमारी आँखों के सामने छा गया है। बहरहाल अपने बाप के तर्ज़े अमल में यह नसबुल ऐन नुमायाँ पाया कि चाहे हालात कितने ही नासाज़गार हों मगर हमें इस्लाम की ख़िदमत से हाथ नहीं उठाना चाहिये। हमारा और कुरआन का साथ है इसलिये कुरआन की हिफ़ाज़त हमारा फ़र्ज़ है और इस फ़र्ज़ को किसी वक़्त नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता।

हुसैन[अ0स0] ने यह भी देख लिया कि लोग मेरे बाप के पास आते हैं और वह उन्हें जोश दिलाना चाहते हैं कि आप इस्लामी हुकूमत के हुसूल के लिये कोशिश कीजिये जो वाक़ई आपका हक़ है। उठिये और हम आपकी इमदाद

[1]कशफ़ुल ग़ुम्मा पेज/148

[2]सवाएक़े मुहर्रेक़ा पेज/76

के लिये तय्यार हैं। उनमें सच्चे दोस्त भी हैं और नुमाइशी भी। एक तरफ़ रसूल के चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब कहते हैं कि अपना हाथ बढ़ाओ, मैं तुम्हारी बैअत कर लूँ। इसका मुसलमानों पर बड़ा असर पड़ेगा। और वह कहेंगे कि पैग़म्बर के चचा ने उनके इब्ने अम (चचा के बेटे) की बैअत कर ली, फिर किसी को उज़्र न होगा और दसूरी तरफ़ बनी उमय्या का सरदार अबू सुफ़ियान बिन हर्ब है और वह आकर कहता है कि कितने ग़ज़ब की बात है कि आपके होते हुए अरब के एक रज़ील (पस्त) तरीन ख़ानदान ने ग़ल्बा हासिल कर लिया। खुदा की क़सम अगर आप चाहें तो मैं आपकी इमदाद के लिये मदीने को सवार और प्यादों से भर दूँ। मगर चूँकि आपकी ज़ात जज़्बात से बलन्द और नफ़सानियत के लौस से पाक थी और आप इस्लाम का हक़ीक़ी दर्द अपने सीने में रखते थे इसलिये आप अपना हक़ समझते हुए भी उन लोगों के कहने में नहीं आये और आपने अबू सुफ़ियसान को इस तरह डाँट कर जवाब दिया कि ''खुदा की क़सम तुम हमेशा इस्लाम और अहले इस्लाम के दुश्मन रहे हो।''[20] यह इसका अमली इज़हार था कि चाहे हमारे हुकूक़ हाथ से जायें। हमारे शख़्सी मफ़ाद को नुक़सान पहुंचे मगर हमको हमेशा इज्तेमाई और इस्लामी मफ़ाद पर नज़र रखना चाहिये और इसके लिये हर तरह की कुर्बानी के लिये तय्यार रहना चाहिये। यह नतीजा भी इस वाक़ेये से ज़ाहिर था कि अबू सुफ़ियान और उसके ख़ानदान के लोगों का इस्लाम सिर्फ़ नुमाइशी हैसियत रखता है और उनसे इस्लाम के मुतअल्लिक़ हमेशा नुक़सान रसानी का अन्देशा मौजूद है। इसीके साथ यह भी कि इस्लाम को उसके खुले हुए दुश्मनों के हाथों इतना नुक़सान नहीं पहुंच सकता था जितना इन नुमाइशी दोस्तों से पहुँच सकता है इसलिये अगर इस्लाम का तहफ़्फ़ुज़ करना है तो हमेशा इस जमाअत की नक़लो हरकत पर नज़र रखना चाहिये और कोई मौक़ा न आने देना चाहिये कि यह अपने मक़सद में कामयाब हो जाये।

अफ़सोस है कि रसूल[स0अ0] की वफ़ात से चन्द ही महीनों के बाद गूनागूँ (तरह तरह) मसाएब व तकालीफ़ उठाने के साथ हुसैन[अ0स0] से उनकी बुज़ुर्ग मर्तबा माँ भी जुदा हो गईं। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स0अ0] की वफ़ात से अली इब्ने अबी तालिब[अ0स0] और भी दिल शिकस्ता हो गए और हसन व हुसैन[अ0स0] के लिये महरो मोहब्बत की दुनिया बड़ी हद तक वीरान नज़र आने लगी। अब उनके लिये गहवार–ए–शफ़क़त व तरबियत सिर्फ़ एक था और वह उनके बुज़ुर्ग मर्तबा बाप की ज़ात। सात बरस की उम्र से लेकर छत्तीस साल की उम्र तक उन्नतीस साल बराबर हुसैन[अ0स0] अपने वही कमालात के मावरा हज़रत अली इब्ने अबी तालिब[अ0स0] ऐसे हकीमे इलाही, आलिमे रब्बानी, मुअल्लिमे अख़लाक़े इन्सानी और मजमूअ–ए–फ़ज़ाएले नफ़सानी के इल्मी और अमली फ़ुयूज़ (फ़ाएदे) से बहरावर (हासिल करते रहे) होते रहे और यही वह ज़माना है जिसमें आम निज़ामे असबाब की दुनिया में इन्सानियत की हक़ीक़ी तामीर होती है। इस उम्र के आग़ाज़ से बुलूग़ की मुद्दत तक अवसाफ़ व मलकात (कमालात) की दाग़ बेलें पड़ती हैं। नौजवानी के ज़माने में उन पर दीवारें उठती हैं और जवानी के इख़तेताम तक यह इमारत मुकम्मल होकर उस पर

[20] इरशाद पेज/100, इस्तीआब जि/2, पेज/710, सवाएक़े मुहररेक़ा पेज/37, तारीख़ुल ख़ुलफ़ा पेज/45, तबरी जि/3, पेज/202–203)

नक़्शो निगार बन जाते हैं और वह साज़ो सामान और शीशा आलात से भी आरास्ता हो जाती है। हुसैन[अ0स0] के लिये इन तमाम मनाज़िल की ज़ाहरी तकमील अली इब्ने अबी तालिब[अ0स0] की निगरानी में हो रही थी।

हुसैन ने देखा कि उनके वालिदे बुज़ुर्गवार अली इब्ने अबी तालिब[अ0स0] बावजूदेकि ज़माने की बेतवज्जोही, हक़ फ़रामोशी और सर्दमुहरी से कबीदा ख़ातिर (ग़मज़दा) ज़रूर थे लेकिन जब किसी इल्मी मसले में किसी मुहिम के मुतअल्लिक़ मशवरे में, किसी मुक़दमे के फ़ैसले में उनकी ज़रूरत पड़ जाती है और उनसे इमदाद की ख़्वाहिश की जाती है तो वह फ़ौरन बिला उज़्र इमदाद करने के लिये तय्यार हो जाते हैं। यह जज़बा इन्सानों के रवैये के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। वह अगर किसी मन्सब के हुसूल से जिसके हक़दार हों महरूम कर दिये जाये तो वह मुतअल्लिक़ा अफ़राद से ख़फ़ा हो कर अलग हो जायेंगे और अगर इस मन्सब से तअल्लुक़ रखने वाले मुआमिलात में उनसे मदद तलब की जाये तो वह अपनी दिली रंजिश की बिना पर तआउन से इन्कार कर देंगे। इससे अहलेबैत[अ0स0] के हर फ़र्द के सामने यह नमूना पेश हो रहा था कि हम चाहे मुसलमानों के मुआमिलात से कितने ही ग़ैर मुतअल्लिक़ कर दिये जायें मगर हमें कभी अपने को ग़ैर मुतअल्लिक़ समझना नहीं चाहिये। हमें हर ऐसे मौक़े का मुन्तज़िर रहना चाहिए कि जिस वक़्त हमारे ज़रिये से इस्लामी मफ़ाद को हक़ीक़ी फ़ाएदा पहुंच सकता हो तो उस मौक़े पर हमें अपने फ़र्ज़ को अन्जाम देना चाहिये और इस्लाम की ख़िदमत को अपना नसबुल ऐन समझना चाहिये।

तीसरे ख़लीफ़ा के इन्तेख़ाब के मौक़े पर ऐसा वक़्त आया कि हज़रत अली बिन अबी तालिब[अ0स0] तख़्ते हुकूमत को हासिल कर लेते जबकि ख़लीफ़ा–ए–दोम ने अपने इन्तेक़ाल के वक़्त छे आदमियों की कमेटी बना कर ख़िलाफ़त को उनमें मुन्हसिर कर दिया और उनमें से एक हज़रत अली बिन अबी तालिब[अ0स0] को भी क़रार दिया था। तमाम दूसरे अरकान हज़रत अली[अ0स0] को ख़िलाफ़त के मन्सब पर नामज़द करने के लिये तय्यार थे ब–शर्तेकि आप किताब व सुन्नत के अलावा शैख़ेन (अबू बक्र व उमर) की सीरत पर अमल का भी अहद करें।[21] मगर हुसैन[अ0स0] ने देखा कि उनके हक़ीक़त परवर, बलन्द हिम्मत और मुस्तग़नी तबियत (फ़राग़ दिली) बाप ने इस मौक़े को अपने हाथ से दे दिया। इस बिना पर कि वह किताब और सुन्नत पर अमल के अलावा किसी दूसरीशर्त को मानने के लिये तय्यार नहीं हुए। जिसके नतीजे में वह ज़ाहरी ख़िलाफ़त का हुमा (परिन्दा) जो उनके सरे हुमाईयूँ (हुकूमत पाने वाले) पर चक्कर लगा रहा था एक तवील अरसे तक के लिये उनसे अलाहेदा हो गया।

हुसैन[अ0स0] ने इस में एक बड़े अहम सबक़ का अमली नमूना देखा जिस पर उनके आईन्दा एक़दामात की बुनियाद क़ायम थी और वह यह कि शरीअत और मुसलमान हुक्मरानों की सीरत दो अलग अलग चीज़ें हैं। ऐसा नहीं है कि जो हुकूमते वक़्त का आईन और उसका अमल हो उसको शरीअत की रू से भी सही मानना पड़े बल्कि शरीअत के मुस्तक़िल उसूल हैं जिन्हें मुक़्तदा (पेशवा के तौर पर) होना चाहिये और हुकूमत के अमल को उनका मातहत होना चाहिये और जब ऐसा न हो तो एक मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह शरीअत को तस्लीम करे और हुक्काम के अमल को तसलीम

[21] तबरी जि/5, पेज/40

न करे और अगर किसी वक़्त ऐसा मौक़ा पेश आये कि हुक्काम का अमल खुल्लम खुल्ला शरीअत के ख़िलाफ़ और आईने मज़हब में बुनियादी तब्दीली का बाइस हो तो मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वह शरीअत की हिमायत में कमर बस्ता हो जाये और इसके लिये ब–शर्ते ज़रूरत किसी कुर्बानी से दरेग़ न करे। इसी दौर में सन 31 हिजरी में यज़्द जुर्द बादशाहे ईरान का सरासीमगी और कस्मपुरसी के आलम में एक ईरानी ही के हाथ से ख़ातिमा हुआ।[22] जिसके बाद शाहज़ादियाँ ब–हैसियते क़ैदी के मदीने भेजी गईं और इस मौक़े पर जबकि ग़नीम मुल्क की शाहज़दियों को क़ैद देखकर बहुत से आदमी खुश हो रहे होंगे हज़रत अली और उनके आली दिमाग़ शाहज़ादा हुसैन ने उन्हें कनीज़ी की ज़िल्लत से बचा ही नहीं लिया बल्कि उन्हें ख़ानदाने रसूल के घर में मलेका का ताज पहना दिया। चुनाँनचे वह शाहज़ादी जिनका नाम शहरबानो या शाह ज़मान मशहूर है हुसैन[अ0स0] के अक़्द में आईं और इस तरह उन्होंने इस्लाम की इस तालीम को ज़िन्दा रखा जो मुल्की तफ़रीक़ को मिटा देने की अलमबरदार है।

तीसरे ख़लीफ़ा उसमान के दौर का आख़री हिस्सा बड़ी बे इतमिनानी और कशमकश में गुज़रा, मुसलमानों को उनसे शिकायतें पैदा हुईं और आख़िर एक़दामात की हद तक पहुंचीं मगर हज़रत अली बिन अबी तालिब[अ0स0] ने उन एक़दामात को तक़वियत पहुंचाने के बजाये पूरी कोशिश के साथ उनको रोकने की सई (कोशिश) फ़रमाई। कई मर्तबा बीच में पड़ कर सुलह कराई। मुख़ालिफ़ जमाअत की शिकायात दूर कराईं और उसे समझा बुझा कर मुन्तशिर किया।[23] मगर मरवान जो उस दौर में ''कातिब''[24] के ओहदे पर था उसकी शरारतों ने इन कोशिशों को कामयाब न होने दिया और आख़िर इस जमाअत ने हाकिमे वक़्त के मकान का मुहासेरा कर लिया।[25] उस वक़्त भी हज़रत अली इब्ने अबी तालिब[अ0स0] ने यह हमदर्दी की कि जब आपको मालूम हुआ कि मुहासिरा करने वालों ने पानी बन्द कर दिया है तो आपने हसन और हुसैन[अ0स0] अपने दोनों फ़रज़न्दों को कुछ मश्कों के साथ रवाना किया और उन दोनों साहबज़ादों ने अपने को ख़तरे में डाल कर पानी क़सरे हुकूमत के अन्दर पहुँचा दिया। बहर हाल नज़मे हुकूमत का पैमाना लबरेज़ था और पानी सर से ऊँचा हो चुका था। हमला आवर जमाअत ने दारूल हुकूमत की सरज़मीन को ख़लीफ़ा के खून से रंगीन और उनके रिशत–ए–हयात को क़ता कर दिया।

हैरत का अम्र है कि इतना बड़ा मुस्लिम अकसरियत का मुसल्लमुस सुबूत (कामिल) फ़रमाँरवा खुद अपने दारूस सलतनत में एक महीना उन्नीस दिन महसूर रहा।[26] और आख़िर तलवार के घाट उतार दिया गया और इस दारूस सलतनत के लोगों में जो पैग़म्बर का दारूल हिजरत (हिजरत का घर) और मुसलमानों का सबसे बड़ा मरकज़ था और जहाँ के अहले हल्लो अक़द (असर वाले) ख़लीफ़ा गरी के काम का अपने को वाहिद ज़िम्मेदार समझते

[22] तबरी जि/5, पेज/71

[23] तबरी जि/5, पेज/96–97–110–117.व 122

[24] कातिब का दर्जा उस दौर में ''वज़ीर'' का सा होता था। वह हाकिम का राज़दार, मुशीरकार, उसकी मोहर का इमानतदार और उसकी तरफ़ से ख़त व किताबत का ज़िम्मादार होता था।

[25] अल–वरा वल–किताब पेज/14, तबरी जि/5, पेज/111–112, [26] तबरी जि/5, पेज/122

थे कोई जोशे मक़ाविमत (बदले का जज़्बा) पैदा न हुआ। इससे ज़्यादा तअज्जुब की यह बात है कि लाश तीन दिन तक बे गोरो कफ़न रही।[27] और आम्म–ए–मुसलिमीन (आम मुसलमान) दफ़्न की तरफ़ मुतवज्जा नहीं हुए आख़िर में रातों रात ''हश कौकब'' नाम के मक़ाम पर जो मुसलमानों के क़ब्रिस्तान से अलग था सिपुर्दे ख़ाक किये गए।[28]

इस इबरत ख़ेज़ मुरक़्क़े से एक हस्सास इन्सान किस क़द्र अहम नताएज अख़्ज़ (ले) कर सकता था, सलतनते दुनिया की बे सेबाती (मिटने वाली), जमहूर (अवाम) की वफ़ादारी पर अदमे एतेमाद (भरोसा न होना) नीज़ मरवान और दूसरे बनी उमय्या के हाथों इस्लाम के शीराज़े की अबतरी (तबाही) यह सब कुछ हुसैन[अ0स0] ने देखा और अपनी आइन्दा ज़िन्दगी के सबसे अहम कारनामे की बुनियादों को मुस्तहकम (मज़बूत) बनाने में उनमें से हर एक पहलू का लिहाज़ रखा जिसके सुनने और समझने के लिये आपको मुस्तक़बिल का इन्तेज़ार करना चाहिये।

हालात बहुत तेज़ी से तब्दील होते हैं और इन हालात के लिहाज़ से जमहूर के रूजहानात भी बदलते रहते हैं। इस हंगामी इन्क़ेलाब के नतीजे में मुसलमानों की आँखें खुलीं और उनके इन्तेख़ाब की निगाहें हज़रत अली बिन अबी तालिब[अ0स0] के चेहरे पर जम गईं। उन्होंने आपके पास आकर ख़िलाफ़ते इस्लामी की ज़िम्मेदारी को संभालने की दरख़्वास्त की। यह बात हैरत में डालने वाली थी कि हज़रत अली बा–वजूदेकि इसके पहले हमेशा ख़ल्क़े ख़ुदा की हिदायत और उनके नज़मो नस्क़ की इस्लाह के लिये बे चैन और ख़िलाफ़ते रसूल[स0अ0] के लिये अपने इस्तेहक़ाक़ (हक़) का ऐलान फ़रमाते रहे थे। आज मुसलमानों की इस मुत्तफ़ेक़ा मुलतजियाना पेशकश को मुस्तरद फ़रमा रहे थे।[29] और इसके लिये किसी तरह तय्यार नहीं थे। हुसैन[अ0स0] ख़ूब जानते थे कि इसका सबब क्या है? हुकमूत और उम्माले हुकूमत (हुकूमत के मुलाज़िम) हुकूमत के रवैये की ब–दौलत मुसलमानों की आदतें बिगड़ चुकी थीं और ज़ाविय–ए–निगाह (नज़रया) में तब्दीली हो चुकी थी, इस्लामी हुकूमत बड़ी हद तक दुनयवी एक़तेदारे सलतनत के क़ालिब (दिलों) में ढल गई थी और किसरवियत व क़ैसरियत (बादशाहत) के आसार उसमें नमूदार हो गए थे। यह चीज़ किसी तरह उस सादगी और मसावात के साथ साज़गार न थी जिसे पैग़म्बरे इस्लाम[स0अ0] ने दुनिया में फैलाया था और जिस पर हज़रत अली बिन अबी तालिब[अ0स0] निहायत सख़्ती के साथ आमिल (पाबन्द) थे इसलिये हज़रत ख़ूब जानते थे कि अगर मैं इस वक़्त हुकूमत की बाग को संभालूँगा तो या तो मुझे ज़माने के साथ साज़ करके हवा के रूख़ पर चलना पड़ेगा और इसके लिये मेरा ज़मीर मुझको इजाज़त नहीं दे सकता और या मैं ज़माने के साथ जंग करूँगा। बेशक अगर मैं ज़िम्मेदारी अपने सर ले लूँ तो मुझे ऐसा ही करना चाहिये मगर उसका नतीजा यह होगा कि ममलिकत में ख़लफ़िशार (उथल पुथल) रहेगा और ब–हैसियत एक हाकिम के मेरा दौर ना कामियाब समझा जायेगा। आपने पूरे तौर पर इन्कार किया मगर मुसलमानों का इसरार इतमामे हुज्जत की सूरत इख़्तियार कर गया यानी वह अली बिन अबी तालिब[अ0स0] पर यह ज़िम्मेदारी

[27] तबरी जि/5, पेज/143 [28] तबरी जि/5, पेज/143–144

[29] तबरी जि/5, पेज/152

आयद करने लगे कि दुनिया आपसे हिदायत व इस्लाह की तालिब है और आप इससे गुरेज़ करते हैं। एक दाईये हक़ (हक़ के नुमाइन्दे) को यह भी ज़ेबा नहीं है कि वह ख़ल्क़े खुदा पर बे एतेमादी की आड़ पकड़ कर उनकी दरख़्वास्त को ठुकराता रहे और उनकी हिदायत की ज़िम्मेदारी को पूरा कर के उन पर हुज्जत तमाम न करे। मजबूरन हज़रत अली[अ0स0] को यह ज़िम्मेदारी कुबूल फ़रमाना पड़ी। बेशक आपने दुनिया को धोखे में मुबतिला न रखने के लिये साफ़ ऐलान कर दिया कि देखो जब तुम ज़िम्मेदारी को मेरे सिपुर्द कर रहे हो तो मैं जो ठीक रास्ता समझूँगा उसी पर तुम्हें चलाऊँगा और किसी के एतेराज़ और नुक्ता चीनी की परवा न करूँगा। [30]लोगों ने इसका इक़रार करके ज़िलहिज्जा सन 35 हिजरी में अली बिन अबी तालिब[अ0स0] की बैअत की और ख़लीफ़तुल मुसलिमीन तस्लीम किये गए। इससे एक तरफ़ यह साबित किया गया कि दुनिया की फ़िज़ा अब अहलेबैत[अ0स0] की हुकूमत व इक़्तेदार के लिये मौजू नहीं है। दूसरी तरफ़ यह कि अगर अल्लाह के बन्दे वफ़ादारी के अहद के साथ रहनुमाई के तालिब हों तो जब तक हुज्जत उन पर पुरे तौर से तमाम न हो जाये हमारा फ़र्ज़ यह है कि हम ब–ज़ाहिर उनके अहदो पैमान को बावर (वाज़ेह) करें और उनकी ख़्वाहिशे रहनुमाई की तकमील के लिये क़दम आगे बढ़ायें।

ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी कुबूल करने के बाद वही हुआ जो हज़रत अली बिन अबी तालिब[अ0स0] पहले से समझे हुए थे कि दुनिया आपके तालीमात की पैरवी के लिये तय्यार नहीं हुई। कुछ लोगों ने तो बैअत से पहलूतेही की जैसे उसामा बिन ज़ैद हस्सान बिन साबित, अब्दुल्लाह बिन उमर और सअ्द बिन अबी वेक़ास वग़ैरह। हज़रत अली[अ0स0] ने उनके साथ कोई सख़्ती नहीं की हालाँकि तमाम मुसलमानों के नुक़त–ए–नज़र से आप की बैअत मुकम्मल हो चुकी थी और इसलिये उनका बैअत से इन्हेराफ़ उन सबके नज़दीक ग़लत था मगर जब तक वह अमली तौर से कोई मुख़ालिफ़त न करते और इस निज़ाम में ख़लल न डालते, ज़रूरत ही क्या थी कि उनसे तअररूज़ (टोका) किया जाय जबकि उसूले मज़हब में दस्तूर यह है कि **''लाइकराह फ़िद्दीन''**(दीन में ज़बरदस्ती नहीं) तो ख़िलाफ़त के तस्लीम कराने में इकराह के क्या मानी?

लेकिन बाज़ लोगों का यह मशवरा कि मुआविया और जितने उसमान के ज़माने के आमिल (काम करने वाले) हैं उन सबको आप बरक़रार रखें और जब वह मुतमइन हो जायें और आपकी गिरफ़्त में आ जायें तो फिर चाहे सबको माजूल कर दें। इसे आप ने मन्जूर नहीं फ़रमाया और आपने कहा और मज़हबी ज़िम्मेदारी[31]के लिहाज़ से आप इसके सिवा कह ही क्या सकते थे कि सियासते दुनिया के लिहाज़ से तो बेशक यही बेहतर है जो तुम कहते हो मगर जब मैं जानता हूँ कि वह ज़ालिम और ना अहल हैं तो उन्हें अपनी तरफ़ से हुकूमत का परवाना भेजकर मैं उनके मज़ालिम में शरीक हूँ। यह क्योंकर हो सकता है।

[30]तबरी जि/5, पेज/156

[1]पैग़म्बरे इस्लाम[स0अ0] का इरशाद है कि जो शख़्स मुसलमानों की हुकूमत का ज़िम्मेदार हो फिर वह अपनी जानिब से किसी शख़्स को वाली क़रार दे दराँहालेकि उससे बेहतर शख़्स मुसलमानों के मफ़ाद के लिये मौजूद हो तो उसने खुदा व रसूल से ख़्यानत की। दूसरी हदीस में है कि जो शख़्स किसी आदमी को कोई मन्सब अता करे किसी जमाअत के अन्दर हालाँकि उस जमाअत में उस आदमी से ज़्यादा पसन्दीदा शख़्स मौजूद है तो उसने खुदा और उसके रसूल और तमाम मोमेनीन से ख़ायानत की। अस–सियासतुश शरीया फ़ि सलाहिर राये व राईया लिश्शैख़ इब्ने तैमिया पेज/3

हज़रत अमीर (अ0) का एक खुत्बा

तौहीद, बिअ्सत और कुरआन की चर्चा

मौलाना मुफ़्ती जाफ़र हुसैन साहब किब्ला ता0स0

वह (खुदा बन्द–ए–आलम) बियाबानों (जंगलो) में चौपायों के नाले फ़र्यादें) सुनता है, तन्हाइयों में बन्दों के गुनाहों से आगाह है, और अथाह दरयाओं में मछलियों की आमद व शुद और तुन्द हवाओं के टकराव से पानी के थेपेड़ों को जानता है। मैं गवाही देता हूं। कि मोहम्मद (स0) अल्लाह के बरगजीदः उस की वहयि के तरजुमान के पयग़ाम्बर है।

मैं तुम्हें उस अल्लाह से डरने की नसीहत करता हूं कि जिस ने तुम्हें पैदा किया और जिस की तरफ तुम्हें पलटना है। वही तुम्हारी कामरानियों का ज़रीआ और तुम्हारी आरज़ुओं (आकांक्षाओं) की मंज़िले मुन्तहा है। तुम्हारी राहे हक़ उसी की तरफ पलटती है, और वही खौफ व हिरास के वक़्त तुम्हारें लिये पनाह गाह है। दिल में अल्लाह का खौफ रखो क्योंकि यह तुम्हारे दिलों के रोग का चारा, फिक्र व शुअूर की तारीकियों के लिये उजाला जिस्मों की बीमारियों के लिये शिफ़ा, सीने की तबाह कारियों के लिये इस्लाह, नफ़्स (मन) की कसाफ़तों (गंदगियों) के लिये पाकीज़गी, आंखों की तीरगी के लिये जिला, दिल की दहशत के लिये ढारस और जिहालत की आँधियों के लिये रौशनी हैं सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर अल्लाह की इताअत का जामा न ओढ़ लो बलकि उसे अपना अन्दरूनी पहनावा बनावो बलकि ऐसा करो कि वह तुम्हारे बातिन (अन्तकरण) में उतर जाये और पसलियों के अन्दर दिल में रच बस जाये और उसे अपने मुआमलात पर हुक्मराँ और हश्र में वारिद होने के वक्त सर चश्मा, मंज़िल–ए–मक़्सूद तक पहुँचने का वसीला, ख़ौाफ के दिन के लिये सिपर (ढाल), कब्र के लिये चराग तन्हाई की तवील रातों के लिये हमनवा व दमसाज़ और मंज़िल की अन्दोहनाकियों के रिहाई का ज़रीअःकरार दो। क्योंकि इताअत–ए–खुदा, घेरने वाले महलको, पेश आइन्द ख़ौफ़ व दहशत के मरहलों और भड़कती हुवी आग की लपक के लिये पनाह गाह हैं जो तक़वा (संयम) को मज़्बूती से पकड़ लेता है तो मुसीबतें उसके क़रीब होने के बावजूद दूर हट जाती है। तमाम उमूर तल्ख़ी व बदमज़गी के बाद शीरीं व खुश गवार हो जाते है। तबाही व हलाकत की मौजे हुजूम करने के बाद आसान हो जाती है। कह्त व नायाबी (अकाल न दुर्लभता) के बाद लत्फ़ो करम (अनुकम्पा एवं कृपा) की झड़ी लग जाती है। रहमत बर्गश्तः होने के बाद फिर झुक पड़ती है। ज़मीन में पायाब होने के बाद फिर नेअ्मतों के सर चश्मे उबल पड़ते हैं। फुवार की कमी के बाद रहमत व बरकत की घुआंधार बारिशें होने लगती है। उस अल्लाह से डरो। कि जिस ने पन्द व मवाइज़ और वाज़ेव नसीहत की, अपनी नेअ्मतों से तुम पर लुत्फ़ व इहसान किया। उसकी बन्दगी व नियाज़मन्दी करो और उसकी फ़र्मांबरदारी का पूरा पूरा हक़ अदा करो। फिर यह कि इस्लाम ही वह दीन है जिसे अल्लाह ने अपने पहचानवाले के लिये पसन्द किया। अपनी नज़रों के सामने उस की देखभाल की। उस की तब्लीग़ (प्रचार) के लिये बेहतरीने–ए–ख़ल्क़ (सृष्टि में सर्वोत्तम) का इन्तिख़ाब फरमाया। अपनी मोहब्बत पर

उस के सूतून (स्तम्भ) खड़े किये। उस की बरतरी की वज्ह से तमाम दीनों को सर निगूं किया, और उस की इज़्ज़त व बुज़ुर्गी के ज़रीअे दुश्मनों को ज़लील और उस की नुस्रत व तायीद से मख़लिफ़ों को रूसवा किया। उस के सूतून से गुमराही के खम्बों को गिरा दिया। प्यासों को तालाबों से सैराब किया। और पानी उलचने वालों के ज़रीअे हौज़ों को भर दिया। फिर यह कि उसे इस तरह मज़्बूत किया कि उस के बंधनों के लिये शिकस्त व रेख़्त नहीं। न उस के हलक़े की कड़ियां अलग अलग हो सकती हैं, न उस की बुनयाद गिर सकती हैं न उसके सुतून अपनी जगह छोड़ सकते है, न उस का दरख्त उखड़ सकता है, न उस की मुद्दत (अवधि) ख़त्म हो सकती है न उस के क़वानीन (नियम) महव (लुप्त)हो सकते हैं न उसकी शाख़ें कट सकती हैं न उसकी राहे तंग न उसकी आसानियां दुश्वार हैं न उसके सफेद दामन पर सियाही का धब्बा न उसकी कुशादा राह में कोई दुश्वारी हे उसके चराग गुल होते है न उसकी ख़ुश गवारियों में तलख़ियोंका गुज़र होता है इस्लाम ऐसे सुतूनों पर हावी है जिसके पाये (स्तम्भ) अल्लाह के हक़ की सरज़मीन में क़ायम किये हैं और उनकी तनाबों ने बुनियाद को इस्तिहकाम बख्शा है और ऐसे सरचश्में है जिन के चश्मे पानी से भरपूर और ऐसे चराग हैं जिन की लवें ज़ियाबार (प्रकाशदायक) हैं। ऐसे मीनार है जिन की रौशनी में मुसाफ़िर कदम बढ़ाते हैं और ऐसे निशान हैं कि जिन से सीधी राहों का क़स्द (इरादा) किया जाता है और ऐसे घाट हैं जिन पर उतरने वाले उन से सेराब होते हैं। अल्लाह ने इस्लाम में अपनी इन्तिहा–ए–रिज़ामन्दी बलन्दतरीन अरकान, और अपनी इताअत की ऊंची सत्ह को क़रार दिया है। चुनांचे अल्लाह के नज़्दीक उसके सुतून मज़्बूत उसकी इमारत सरबलन्द, दलीलें रौशन, और ज़ियाए नूर पाश हैं। उसकी सलतनत गालिब और मीनार बलन्द है, और उसकी बेख़कनी (जड़ काटना) दुश्वार है। उसका इज़्ज़त व वक़ार बाकी रखो, उस के अहकाम की पैरवी करो उसके हुकूक (दय) अदा करो और उस के हर हुक्म को उस की जगह पर कायम करो। फिर यह कि अल्लाह सुब्हानहू ने मोहम्मद (स0) को उस वक़्त हक के साथ मब्अूस किया जब कि फना ने दुनिया पर डेरे डाल दिये और आख़िरत पर मंडालाने लगी उसकी रौनकों का उजाला अंधेरे में बदलने लगा। उस का फर्श दुरूश्त (कठीर) व नाहमबार हो गया और फ़ना के हाथों में बागडोर देने के लिये आमादा हो गया यह उस वक़्त कि जब उस की मुद्दत इख्तिताम पज़ीर (समायन के निकट) और फ़ना की अलामतें (सर्विनाश के लक्षण) करीब आ गयी। उसके बसने वाले तबाह और उसके हल्के की कड़ियां अलग होने लगीं। उस के बंधन परागंदा और निशानात बोसीदा हो गये उसके अैब खुलने और फैले हुवे दामन सिमटने लगे। अल्लाह ने उन को पयग़ाम रसानी और यार व अंसार की रिफ़अत व अिज़्ज़त का सबब क़रार दिया फिर आप पर ऐसी किताब नाज़िल फरमायी जो सरापा नूर है, जिस की क़िन्दील गुल नहीं होती, पसा नगमा है जिस की लव खामोश नहीं होती, ऐसा दरया है जिस की थाह नहीं लगायी जा सकती। ऐसी शाहराह है जिसमें राह पैमाई बेराह नहीं करती ऐसी किरन है जिस की छूट धीमी नहीं पड़ती वह ऐसा हक़ व बातिल में इम्तियाज़ करने वाला है जिस की दलील कमज़ोर नहीं पड़ती । ऐसा खोल कर बयान करने वाला है, जिस के सुतून मुन्हदिम नहीं किये जा

(बक़िया पेज नं0 18 पर,.....)

मुख्य समाचार

दुनिया की बेजा मुहब्बत हर अमल को ज़ाया कर देती है: मौलाना कल्बे जवाद नक़वी

लखनऊ 16 जूनः माहे रमज़ानुल मुबारक के तीसरे जुमे में क़ायदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी ने रोज़े दारों को ख़िताब करते हुए दुनिया की बेजा मुहब्बत से बचने की तलक़ीन की। मौलाना ने अपने ख़िताब में कहा कि दुनिया की बेजा मुहब्बत इंसान के हर अमल को ज़ाया कर देती है। शैतान भी इंसान को इसी दुनिया के ज़रिये बहकाता है। उन्होंने कहा कि क़ुरआन के मुताबिक़ इंसान पर दुनिया की हयात को ख़ूबसूरत बनाकर पेश किया जाता है ताकि उसे धोका दिया जा सके। मौलाना ने वज़ाहत करते हुए कहा कि इंसान की लाज़्मी ज़रूरत की चीज़ों को कभी सजा संवार कर पेश नहीं किया जाता है बल्कि उन चीज़ों को सजाया जाता है जो लाज़मी ज़रूरत नहीं होती है ताकि सजावट और ख़ूबसूरती का धोका देकर उन्हें ज़रूरत बना दिया जाए। क़ुरआन कहता है कि जिसकी आंखों पर ग़फ़लत के पर्दे पड़े होते हैं वही दुनिया की ख़ूबसूरती से धोका खाता है। मौलाना ने ख़ैरात व सदक़ात की अहमियत बताते हुए कहा कि इस माहे मुबारके रमज़ान में रोज़े दार को चाहिये कि ज़्यादा से ज़्यादा ख़ैरात करे क्योंकि अल्लाह की राह में जो कुछ दिया जाता है वह ज़ाया नहीं होता। अल्लाह की राह में दिए जाने वाला माल कभी ख़र्च नहीं होता बल्कि वह अल्लाह के यहां महफ़ूज़ होता है। अल्लाह ने वादा किया है कि एक नेकी पर दस गुना अता करेगा बल्कि बे हिसाब अता करेगा। मौलाना ने कहा कि अल्लाह की राह में ख़ैरात की तीन सूरतें होती हैं। पहली सूरत को इनफ़ाक़ कहते हैं। इनफ़ाक़ का मतलब होता है जो तुमसे बच जाए उसे अल्लाह की राह में दे दो। यह अक़ीदा रखते हुए कि जिसने आज दिया है वह कल भी तुम्हें फ़रामोश नहीं करेगा। दूसरी सूरत का नाम मसावात है। यानी सबके साथ बराबरी का सुलूक करो। जो तुम अपने लिए पसंद करो वही दूसरों के लिए पसंद करो। और तीसरी सूरत का नाम ईसार है। यानी खुद भूके रह जाओ मगर दूसरों को भूका न रहने दो। यह आले मुहम्मद(अ0) का दर्जा है। मौलाना ने कहा कि माहे मुबारके रमज़ान में रोज़े दार को चाहिये कि वह अपने माल की ज़कात निकाले और ज़्यादा बंदगाने खुदा में ख़ैरात करे।

हुकूमत का वक़्फ़ बोर्ड को तहलील किए जाने का फ़ैसला सही है: मौलाना कल्बे जवाद

16 जून 2017 को क़ायदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी ने शिया व सुन्नी वक़्फ़ बोर्ड को तहलील किए जाने के हुकूमत के फ़ैसले का ख़ैर मक़दम करते हुए कहा कि अच्छा फ़ैसला आने में देर तो लगी मगर फ़ैसला सही आया है। मौलाना ने कहा कि अब बद उनवाद प्रोपेगंडा कर रहे हैं कि हुकूमत वक़्फ़ बोर्ड को तहलील करके हड़पना चाहती है मगर वह भूल जाते हैं कि तहलील करने से पहले उन्हें अपना मौक़िफ़ रखने का मौक़ा दिया जाता है ताकि वह अपनी बे गुनाही साबित कर सकें। मौलाना ने कहा कि वक़्फ़ बोर्ड में बद उनवानी अपने उरूज पर थी क्योंकि नक़्ली वक़्फ़ नामे गढ़े गए थे और बुज़ुर्ग ओलमा के जाली दस्तख़त बनाए गए थे। इंशा अल्लाह अब ज़ालिमों और बे ईमानों को ज़रूर सज़ा मिलेगी। मौलाना ने कहा कि ओलमा और अवाम की क़ुरबानियां बेकार नहीं जाएंगी। यह उनकी क़ुरबानियों का असर है कि बे ईमानों के ख़िलाफ़ कार्रवाई हो रही है।

लखनऊ में हज़रत अली(अ0) की शहादत पर जुलूस अम्न व अमान के साथ इख़्तिताम पज़ीर

15 जून 2017 को लखनऊ में सुब्ह ग्लीम वाला ताबूत शबीहे मस्जिदे कूफ़ा से रिवायती शान व शौकत से बरामद हुआ जो नख़ास आकर इख़्तिताम पज़ीर हुआ और फिर तीसरे रोज़ यानी 21 रमज़ानुल मुबारक को बादे नमाज़े फ़ज्र शबीहे रौज़ा–ए नजफ़, रूस्तम नगर लखनऊ से मरहूम हसन मिर्ज़ा का बिना कर्दा शबीहे ताबूते अमीरूल मोमेनीन(अ0) बरामद हुआ। जिसमें लखनऊ के अलावा दीगर ज़िलों के मोमेनीन ने भी कसीर तादाद में शिरकत की। यह जुलूस बिल्लौज पुरा चौराहे होता हुआ करबला–ए ताल कटोरा लखनऊ पहुंच कर इख़्तिताम पज़ीर हुआ।

करबला–ए ताल कटोरा में पूरे दिन मजलिस व मातम का सिलसिला जारी रहा जो नमाज़े मग़रिबैन के वक़्त ख़त्म हुआ। इस मौक़े पर ज़िला इन्तिज़ामिया की तरफ़ से बेहतरीन हिफ़ाज़ती इन्तिज़ामात थे।

(बक़िया पेज नं0 16 का,.....)

सकते । वह सरासर शिफ़ा है जिस के होते हुवे रूहानी बीमारियों का खतरा नहीं । वह सर ता सर इज़्ज़त व ग़लबा है। जिस के यार मददगार शिकस्त नहीं खाते। वह सरा पा हक़ है जिसके मुअीन व मोआविन बेमदद छोड़े नहीं जाते। वह ईमान का मादन और मरकज़ है । उस से इल्म के चश्मे फूटते और दरया बहते है। वह अदल का चमन और इन्साफ है वह इस्लाम का संगे–ए–बुनियाद और उस की असास है। हक़ की वादी और उस का हमबार मैदान है। वह ऐसा दरया है कि जिसे पानी भरने वाले खत्म नहीं कर सकते। वह ऐसा घाट है कि उस पर उतरने वालों से उस का पानी घट नहीं सकता, वह ऐसा चश्मा कि पानी उलचने वाले उसे नहीं रूक सकते। वह ऐसी मंज़िल है कि जिसकी राह में कोई राहरौ भटकता नहीं। वह ऐसा निशान है कि चलने वाले की नज़र से ओझल नहीं होता। वह ऐसा दील है कि हक़ का क़स्द करने वाले उस से आगे गुज़र नहीं सकते। अल्लाह ने उसे आलिमों की तश्नगी के लिये शाह राह क़रार दिया है। यह ऐसी दवा है कि जिस से कोई मरज़ नहीं रहता। ऐसा नूर है जिस में तीरगी का गुज़र नहीं ऐसी रस्सी है कि जिसके हल्के मज़्बूत है, ऐसी चोटी है कि जिस की पनाह गाह महफ़ूज़ है। जो इस से वाबस्ता हो उस के लिये सर्माथः इज़्ज़त है। जो इस की पयरवी करे उसके लिये हिदायत है। जो इस के हुदूद में दाखिल हो उसके लिये पयग़ाम–ए–सुल्ह व अम्न है। जो इसे अपनी तरफ निस्बत दे उसके लिये हुज्जत है। जो इस की ऐसे बात करें उसके लिये दलील व बुर्हान है। जो उसकी बुनयाद पर बह्म व मुनाज़रा करे उसके लिये गवाह है। जो इसे हुज्जत बना कर पेश कर उसके लिये फत्ह व कामरानी है। जो इसका बार उठाये यह उस का बोझ उठाने वाला है। जो इसे अपना दस्तूर–उल–अमल (संविधान) बनाये उसके लिये मरब–ए–तेज़गाम हैं यह हक़ीक़त शिनास के लिये एक वाज़िह निशान है। जो ज़लालत से टकराने के लिये सिलाह बन्द (हथियारबन्द) हो उसके लिये इल्म व दानिश है। बयान करने वाले के लिये बेहतरीन कलाम और फैसला करने वाले के लिये कत्अी हुक्म।